दृष्टि The Vision

करेंट अफेयर्स उत्तर प्रदेश

फरवरी (संग्रह)

2022

दृष्टि, 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

फोन: 8750187501

ई-मेल: online@groupdrishti.com

अनुक्रम

उत्तर प्रदेश **3**

- गोकुला जाट 3
- MBBS के 12 छात्रों ने राष्ट्रपति से की इच्छामृत्यु की मांग 3
- बखिरा वन्यजीव अभयारण्य रामसर स्थल घोषित 4
- आजीवन कारावास संबंधी मामलों में समय पूर्व रिहाई की नीति 4
- उत्तर प्रदेश की झाँकी सर्वश्रेष्ठ झाँकी के रूप में चयनित 5
- भारत की डाक्यूमेंट्री फीचर 'राइटिंग विथ फायर' 5
- उत्तर प्रदेश सार्वजनिक और निजी संपत्ति के नुकसान की भरपाई अधिनियम, 2020 5
- मणि पर्वत का सौंदर्यीकरण 6
- न्यूयॉर्क में मेड इन इंडिया परफ्यूम लॉन्च 6
- नोएडा में वेस्टलैंड टू वेटलैंड परियोजना 7
- स्वदेशी सर्च इंजन 'भारत सर्च' 7
- संजय गांधी पीजीआई में रोबोट से दो बच्चों का जटिल ऑपरेशन 7
- बभनियांव पुरास्थल 8
- बच्चा गोद लेने के लिये मैरिज सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं 8
- लखनऊ में देश का पहला ग्रीन बूथ 9
- चरकुला और कत्थक 9

नोट :

उत्तर प्रदेश

गोकुला जाट

चर्चा में क्यों ?

- 31 जनवरी, 2022 को किरावली में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने भाषण में वीर योद्धा गोकुला जाट के योगदान का उल्लेख किया।

प्रमुख बिंदु

- उल्लेखनीय है कि 1669-70 में, मथुरा क्षेत्र के जाटों ने स्थानीय जमींदार गोकुला के नेतृत्व में विद्रोह किया था। इस विद्रोह के पीछे धर्म मुख्य कारक था, क्योंकि शाही मुगल सरकार के स्थानीय अधिकारी अब्दुल नबी ने हिंदुओं के मंदिरों को नष्ट कर दिया था और उनकी महिलाओं का अपमान किया था।
- जाट विद्रोह उस समय हुआ, जब मुगल सरकार किसी भी तरह से कमज़ोर या निर्बल नहीं थी। मुगल सेना ने जाटों का पीछा किया और नेता गोकुल को पकड़कर मार डाला गया। इसके बावजूद विद्रोह को पूरी तरह से दबाया नहीं जा सका।
- विदित हो कि स्थानीय ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के योगदानो के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सार्वजनिक स्थलों, भवनों एवं सड़कों आदि का नामकरण उन व्यक्तित्वों के नाम पर किया जा रहा है। इसी संदर्भ में गोकुला जाट के नाम पर किरावली में एक सड़क व चौक का भी नामकरण किया गया है।

MBBS के 12 छात्रों ने राष्ट्रपति से की इच्छामृत्यु की मांग

चर्चा में क्यों ?

- 1 फरवरी, 2022 को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर ज़िले के ग्लोकल मेडिकल कॉलेज के MBBS के 12 छात्रों ने राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजकर इच्छामृत्यु की मांग की।

प्रमुख बिंदु

- जनपद के गाँव महेशपुर निवासी छात्र शिवम शर्मा, सहारनपुर के विभोर गोस्वामी, मुजफ्फरनगर के रिजवान और विज्ञनेश ने कलेक्ट्रेट पहुँचकर सिटी मजिस्ट्रेट विवेक चतुर्वेदी को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया। ज्ञापन में 12 छात्र-छात्राओं के प्रार्थना-पत्र राष्ट्रपति के नाम थे।
- इन छात्रों ने बताया कि नीट (NEET) पास करने के बाद उनके एडमिशन 2016 में ग्लोकल मेडिकल कॉलेज में हुए थे। पढ़ाई पूरी करने के एक साल पहले पढ़ाई बंद करा दी गई। MCI ने उनकी पढ़ाई पर रोक लगाई है।
- छात्रों ने आरोप लगाया कि कॉलेज प्रबंधन ने उन्हें इसकी कोई जानकारी नहीं दी। उन्हें कोर्ट से भी राहत नहीं मिल सकी। उनका जीवन अंधकारमय हो गया है, इसलिये वे इच्छामृत्यु की मांग करते हैं।
- वहीं ग्लोकल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर अखिल अहमद ने बताया कि यह मामला पहले भी न्यायालय में जा चुका है, जहाँ पर यह निरस्त हो गया था। जो भी छात्र हैं, उनको यूनिवर्सिटी पहले भी पढ़ाना चाहती थी और आज भी पढ़ाना चाहती है। शासन ने इन्हीं छात्रों की शिकायत पर यूनिवर्सिटी की NOC निरस्त की है। उसके बाद भी यूनिवर्सिटी इन छात्रों के साथ है।

नोट :

बखिरा वन्यजीव अभयारण्य रामसर स्थल घोषित

चर्चा में क्यों ?

- 2 फरवरी, 2022 को विश्व आर्द्रभूमि दिवस के अवसर पर केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने हरियाणा के गुरुग्राम के सुल्तानपुर राष्ट्रीय पक्षी उद्यान में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के 'बखिरा वन्यजीव अभयारण्य' और गुजरात के 'खिजाड़िया वन्यजीव अभयारण्य' को रामसर स्थल घोषित किया।

प्रमुख बिंदु

- इन दोनों अभयारण्यों के रामसर स्थल में शामिल होते ही देश में संरक्षित आर्द्रभूमियों की कुल संख्या बढ़कर 49 हो गई है। अब भारत में रामसर स्थलों की संख्या दक्षिण एशिया के देशों में सबसे अधिक हो गई है।
- इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में रामसर स्थलों की संख्या अब 10 हो गई है- 1. ऊपरी गंगा नदी (ब्रजघाट से नरौरा खिंचाव), 2. नवाबगंज पक्षी अभयारण्य (उन्नाव), 3. साण्डी पक्षी अभयारण्य (हरदोई), 4. समसपुर पक्षी अभयारण्य (रायबरेली), 5. समन पक्षी अभयारण्य (मैनपुरी), 6. पार्वती अरगा पक्षी अभयारण्य (गोंडा), 7. सरसई नावर झील (इटावा), 8. सुर सरोवर झील/कीथम झील (आगरा), 9. हैदरपुर वेटलैंड, 10. बखिरा वन्यजीव अभयारण्य (संत कबीर नगर)।
- उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जनपद में स्थित बखिरा वन्यजीव अभयारण्य बड़ी संख्या में मध्य एशियाई पक्षियों की प्रजातियों के लिये सर्दियों में सुरक्षित और अनुकूल स्थल प्रदान करता है।
- इस अवसर पर भारत की आर्द्रभूमि (भौतिक रूप से) पर अहमदाबाद के स्पेस एप्लिकेशन सेंटर (एसएसी) द्वारा तैयार किया गया 'राष्ट्रीय आर्द्रभूमि दशकीय परिवर्तन एटलस' भी जारी किया गया, जो पिछले एक दशक में आर्द्रभूमि में हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डालता है।
- उल्लेखनीय है कि रामसर संधि आर्द्रभूमि के संरक्षण और कुशलता से उपयोग के लिये एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है, जिस पर 2 फरवरी, 1971 को ईरान के रामसर शहर में हस्ताक्षर किये गए थे।
- आर्द्रभूमि पर संधि को लागू करने की तिथि के प्रतीक के रूप में हर साल 2 फरवरी को पूरी दुनिया में विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाया जाता है। यह लोगों और हमारी धरती के लिये आर्द्रभूमि की महत्त्वपूर्ण भूमिका के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के लिये मनाया जाता है।
- इस वर्ष विश्व आर्द्रभूमि दिवस का विषय 'लोगों और प्रकृति के लिये आर्द्रभूमि की भूमिका' है, जो मानव और धरती के स्वास्थ्य के लिये आर्द्रभूमि के संरक्षण तथा सतत् उपयोग को सुनिश्चित करने के लिये किये जाने वाले कार्यों के महत्त्व पर प्रकाश डालता है।

आजीवन कारावास संबंधी मामलों में समय पूर्व रिहाई की नीति

चर्चा में क्यों ?

- 3 फरवरी, 2022 को सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश सरकार से आजीवन कारावास की समय पूर्व रिहाई की नीति पर पुन: विचार करने निर्देश दिया।

प्रमुख बिंदु

- सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2021 की इस नीति में समय पूर्व रिहाई के लिये कैदियों की न्यूनतम आयु 60 वर्ष होने संबंधी प्रावधान की वैधता पर संदेह व्यक्त किया गया है।
- गौरतलब है कि 2021 की नीति के अनुसार सभी दोषी, जिन्होंने 60 साल की आयु पूरी कर ली है और बिना किसी छूट के 20 वर्ष और छूट के साथ 25 वर्ष जेल में बिता चुके हैं, उन्हें समय पूर्व रिहा किया जा सकता है।
- राज्य सरकार द्वारा बनाई गई इस नीति के तहत दोषियों की समय पूर्व रिहाई के लिये संविधान के अनुच्छेद-161 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग किया गया है।
- अनुच्छेद-161 के अनुसार, किसी राज्य के राज्यपाल को किसी अपराध के लिये दोष सिद्ध किये गए व्यक्ति के दंड को क्षमा, प्रविलंबन, विराम या परिहार करने की शक्ति प्राप्त है।

नोट :

उत्तर प्रदेश की झाँकी सर्वश्रेष्ठ झाँकी के रूप में चयनित

चर्चा में क्यों ?

- 4 फरवरी, 2022 को रक्षा मंत्रालय द्वारा गणतंत्र दिवस 2022 की सर्वश्रेष्ठ झाँकी और सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ियों के परिणाम घोषित किये गए जिसमें उत्तर प्रदेश की झाँकी को सर्वश्रेष्ठ झाँकी के रूप में चुना गया।

प्रमुख बिंदु

- उल्लेखनीय है कि इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड में 12 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों ने भाग लिया था, जिनमें उत्तर प्रदेश की 'एक जिला एक उत्पाद और काशी विश्वनाथ धाम' विषय पर आधारित झाँकी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- दूसरा स्थान कर्नाटक को 'पारंपरिक हस्तकला का पालना' पर आधारित झाँकी के लिये मिला। 'मेघालय राज्य के 50 साल पूरे और महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को श्रद्धांजलि' पर झाँकी के लिये मेघालय को तीसरा स्थान मिला।
- उल्लेखनीय है कि यह पहला अवसर था, जब आम जनता को Mygov प्लेटफॉर्म के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग दल और लोकप्रिय पसंद श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ झाँकी के लिये वोट करने हेतु आमंत्रित किया गया था।
- काशी विश्वनाथ मंदिर गंगा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह बारह ज्योर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर का 1780 ई. के बाद रानी अहिल्या बाई होल्कर ने जीर्णोद्धार करवाया था। साथ ही, वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर परियोजना के पहले चरण का उद्घाटन किया था।

भारत की डाक्यूमेंट्री फीचर 'राइटिंग विथ फायर'

चर्चा में क्यों ?

- 8 फरवरी, 2022 को भारत की डाक्यूमेंट्री फीचर 'राइटिंग विथ फायर' ऑस्कर 2022 के लिये नोमिनेट हो गई है।

प्रमुख बिंदु

- 'राइटिंग विथ फायर' उत्तर प्रदेश के चित्रकूट से प्रकाशित 'खबर लहरिया' पर आधारित है। इस डाक्यूमेंट्री का निर्देशन रिंटू थॉमस तथा सुमित घोष ने किया है।
- 'खबर लहरिया' भारत का एकमात्र अखबार था, जिसे सिर्फ दलित महिलाएँ संचालित करती थीं। आठ पन्नों के अखबार 'खबर लहरिया' में महिला रिपोर्टर बदलते समाज, भ्रष्टाचार, सरकार के अधूरे वादों, गरीबों और महिलाओं से संबंधित मुद्दों को उठाती थीं।
- इस अखबार का प्रकाशन बुंदेलखंडी भाषा में 2002 से प्रारंभ किया गया। हालाँकि, 2015 में यह बंद हो गया। तब से लेकर अब तक मोबाइल पोर्टल पर खबर लहरिया संचालित है।
- उल्लेखनीय है कि 'खबर लहरिया' के लिये इसके संस्थापक NGO निरंतर को यूनेस्को किंग सेजोंग लिट्रेसी सम्मान 2009 से सम्मानित किया गया था।

उत्तर प्रदेश सार्वजनिक और निजी संपत्ति के नुकसान की भरपाई अधिनियम, 2020

चर्चा में क्यों ?

- 11 फरवरी, 2022 को सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार को CAA यानि नागरिकता संशोधन अधिनियम विरोधी प्रदर्शन में शामिल लोगों के खिलाफ जारी वसूली नोटिस को वापस लेने के निर्देश दिये।

नोट :

प्रमुख बिंदु

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिसंबर 2019 में की गई कार्रवाई न्यायालय द्वारा निर्धारित नियमों के विपरीत थी, क्योंकि उत्तर प्रदेश सरकार ने आरोपियों की संपत्तियों को कुर्क करने के लिये कार्रवाई में खुद एक 'शिकायतकर्त्ता, निर्णायक और अभियोजक' की तरह काम किया है। इसलिये इसे कायम नहीं रखा जा सकता।
- यह कार्यवाही 'उत्तर प्रदेश सार्वजनिक और निजी संपत्ति के नुकसान की भरपाई अधिनियम, 2020' के तहत की गई है।
- इस अधिनियम के तहत उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा सार्वजनिक और निजी संपत्ति की नुकसान की वसूली के दावे के लिये अधिकरण के गठन का प्रावधान किया गया है, जिसका नेतृत्व राज्य सरकार द्वारा नियुक्त एक सेवानिवृत्त ज़िला न्यायाधीश द्वारा किया जाएगा और इसमें एक अतिरिक्त आयुक्त रैंक के अधिकारी को शामिल किया जा सकता है।
- यह अधिनियम एक ही घटना के लिये कई अधिकरणों के गठन की अनुमति देता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कार्यवाही तीन महीने के भीतर संपन्न हो जाए, साथ ही अधिकरण को एक ऐसे मूल्यांकनकर्त्ता की नियुक्ति का अधिकार है, जो राज्य सरकार द्वारा नियुक्त पैनल में हानि का आकलन करने हेतु तकनीकीरूप से योग्य हो।

मणि पर्वत का सौंदर्यीकरण

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में अयोध्या स्थित पौराणिक महत्त्व वाले मणि पर्वत (Mani Parvat) के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया।

प्रमुख बिंदु

- पुरातत्त्व विभाग द्वारा संरक्षित प्राचीन मणि पर्वत राम नगरी अयोध्या के प्रसिद्ध सावन झूला मेला का मुख्य केंद्र है। यहाँ प्राचीन टीले पर भगवान राम जानकी का एक मंदिर भी है।
- मणि पर्वत की पौराणिकता को संरक्षित करने के लिये पुरातत्त्व विभाग द्वारा 45 लाख रुपए आंवटित किये गए हैं। जीर्णोद्धार के पहले चरण में मणि पर्वत (Mani Parvat) के गर्भगृह तक पहुँचाने वाली सीढ़ियों का मिर्ज़ापुर के लाल पत्थरों से नवीनीकरण किया जा रहा है। दूसरे चरण में मंदिर के मुख्य द्वार से लेकर अन्य परिसरों की मरम्मत की जाएगी।
- उल्लेखनीय है कि वर्ष 1998-99 में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने मणि पर्वत के सौंदर्यीकरण के लिये 88 लाख रुपए के प्रस्तावों को मंज़ूरी दी थी, जिसके अंतर्गत रामकथा पार्क के लोकार्पण के साथ मणि पर्वत की सौंदर्यीकरण योजना का शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने किया था, किंतु इस योजना पर काम नहीं हो सका और पर्यटन विभाग ने योजना की आवंटित धनराशि सरेंडर कर दी।
- वर्ष 1902 में अयोध्या धाम के ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिये एडवर्ड तीर्थ विवेचनी सभा का गठन किया गया था, जिसने अयोध्या के 148 जगहों को चिह्नित कर उन पर एडवर्ड तीर्थ विवेचनी के पत्थर लगाए थे, ताकि भविष्य में इन धरोहरों को संरक्षित किया जा सके।

न्यूयॉर्क में मेड इन इंडिया परफ्यूम लॉन्च

चर्चा में क्यों ?

- 14 फरवरी, 2022 को उत्तर प्रदेश के कन्नौज के 'मेड इन इंडिया' परफ्यूम को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के हिस्से के रूप में न्यूयॉर्क में लॉन्च किया गया।

प्रमुख बिंदु

- न्यूयॉर्क में भारत के कॉन्सूलेट जनरल ऑफ इंडिया रणधीर जायसवाल ने परफ्यूम 'विकास खन्ना बाय जिघराना' का अनावरण किया।
- गौरतलब है कि कन्नौज अपने खास तरीके के इत्र के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध है।
- यह संभवत: पहली बार है कि अमेरिका में कन्नौज (उत्तर प्रदेश) से एक भारतीय परफ्यूम होगा।

नोट :

- कंपनी ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि जिघराना का नया इत्र 'विकास खन्ना' लौंग, इलायची, जायफल, चंदन, चमेली और गुलाब जैसे तत्त्वों का एक अनूठा मिश्रण है, जो सदियों से भारत की अनूठी महक को परिभाषित करता आया है।
- जिघराना के सीईओ ने कहा कि कंपनी उनके गृहनगर 'भारत की इत्र राजधानी' कन्नौज को समर्पित एक इत्र भी लॉन्च करेगी।

नोएडा में वेस्टलैंड टू वेटलैंड परियोजना

चर्चा में क्यों ?

- नोएडा में वेस्टलैंड टू वेटलैंड परियोजना की तर्ज़ पर सेक्टर 54 के डंपिंग ग्राउंड को समुद्री बीच के रूप में विकसित करने का कार्य किया जा रहा है।

प्रमुख बिंदु

- इस परियोजना का क्रियान्वयन नोएडा प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है।
- 25 एकड़ में बनने वाले इस वेटलैंड में घूमने के लिये पार्क के साथ कई अन्य मनोरंजन के साधन उपलब्ध होंगे, जैसे- साइकिलिंग के लिये एलिवेटेड ट्रैक, व्यू पॉइंट आदि।
- आर्द्रभूमि को जल की उपलब्धता वर्षा जल के साथ आस-पास के सीवेज उपचार संयंत्र से प्राप्त उपचारित पानी से सुनिश्चित की जाएगी।
- गौरतलब है कि एनजीटी द्वारा वर्ष 2019 में नोएडा सेक्टर 54 ग्रीन बेल्ट में कचरा डंप करने को रोकने के निर्देश दिये जाने के बाद ही नोएडा प्राधिकरण द्वारा 'बंजर भूमि' को आर्द्रभूमि में बदलने का निर्णय लिया गया था।

स्वदेशी सर्च इंजन 'भारत सर्च'

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में छत्रपति शाहू जी महाराज यूनिवर्सिटी, कानपुर की इन्क्युबेटेड कंपनी भारत टेक ने अत्याधुनिक स्वदेशी सर्च इंजन 'भारत सर्च' का विकास किया है।

प्रमुख बिंदु

- जिस प्रकार गूगल स्पाइडर अल्गोरिदम से विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर मौजूद विषय वस्तु को अपने प्लेटफॉर्म पर लाता है उसी प्रकार भारत सर्च ने रेट अल्गोरिदम तैयार किया है।
- सर्च इंजन एक प्रोग्राम है जो एक डेटाबेस में उपयोगकर्त्ता द्वारा निर्दिष्ट की वर्ड या वर्णों से मेल खाते हुए विषय की खोज करता है और उन्हें पहचानता है। इसका उपयोग विशेष रूप से वर्ल्ड वाइड वेब पर विशेष साइटों को खोजने के लिये किया जाता है।
- सर्च इंजन वेब क्रॉलिंग, इंडेक्सिंग तथा सर्चिंग आदेश से संचालित होता है।
- इसके अतिरिक्त कंपनी द्वारा विश्व का मानचित्र देखने के लिये बी-मैप्स, ई-मेल भेजने के लिये बी-मेल, ऑनलाइन मीटिंग एवं डाटा शेयरिंग के लिये यूनियन तथा पढ़ाई के लिये बी-बुक एप्लीकेशन तैयार किये गये हैं।

संजय गांधी पीजीआई में रोबोट से दो बच्चों का जटिल ऑपरेशन

चर्चा में क्यों ?

- 18 फरवरी, 2022 को संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस लखनऊ (पीजीआई) में पहली बार रोबोट से दो बच्चों का जटिल ऑपरेशन कर डॉक्टरों ने उन्हें नया जीवन दिया।

नोट :

प्रमुख बिंदु

- पीजीआई, लखनऊ रोबोट के माध्यम से बच्चों के ऑपरेशन की उपलब्धि प्राप्त करने वाला प्रदेश का यह पहला संस्थान बन गया है। दोनों बच्चियों के ऑपरेशन चंडीगढ़ पीजीआई के पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. रवि कनौजिया की अगुवाई में लखनऊ पीजीआई के डॉक्टरों ने किया।
- पीजीआई लखनऊ के पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. बसंत कुमार के अनुसार पहले ऑपरेशन में एक घंटे और दूसरे में डेढ़ घंटे लगे। प्रत्येक बच्चे के ऑपरेशन में करीब एक-एक लाख रुपए का खर्च आया है।
- सोनभद्र ज़िले की निवासी साढ़े तीन साल की मासूम जन्मजात बीमारी 'पित्त की थैली में गांठ'से पीड़ित थी। इस बीमारी को चिकित्सा विज्ञान में कोलोडेकल सिस्ट कहते हैं। इसकी वजह से पित्त की नलियाँ फूल गई थीं तथा पेट में दर्द हो रहा था। रोबोट से ऑपरेशन कर पित्त की थैली को निकाल दिया गया तथा नली को आँत से जोड़ दिया गया।
- दूसरा ऑपरेशन झाँसी की पाँच साल की बच्ची के खाने की नली और पेट में रुकावट थी, जिसकी वजह से उल्टी और डकार आ रही थी। इस बीमारी को चिकित्सा विज्ञान में एक्लीजिया कार्डिया कहते हैं। ऑपरेशन के बाद इस समस्या का समाधान कर दिया गया।
- डॉ. बसंत ने बताया कि रोबोट से सटीक एवं सुरक्षित ऑपरेशन होता है। इसमें जोखिम कम है। रक्तस्राव व दर्द के साथ अस्पताल में रुकना भी कम पड़ता है।
- गौरतलब है कि देश में सिर्फ पाँच संस्थानों में रोबोट से बच्चों के ऑपरेशन हो रहे हैं।

बभनियांव पुरास्थल

चर्चा में क्यों ?

- 20 फरवरी, 2022 को वाराणसी ज़िले की राजातालाब तहसील के बभनियांव में चार हज़ार वर्ष पुरानी सभ्यता की पुष्टि के लिये बीएचयू के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा पुन: उत्खनन प्रारंभ किया गया।

प्रमुख बिंदु

- इस उत्खनन का उद्देश्य वर्ष 2020 में हुए उत्खनन में मिले एकमुखी शिवलिंग के काल और विवरण की खोज करना है। साथ ही यह भी पता लगाया जाएगा कि यहाँ से प्राप्त हुए अभिलेख, सिक्के और मृद्भांड का संबंध इसी क्षेत्र से है या इन्हें कहीं और से लाकर स्थापित किया गया है।
- गौरतलब है कि वर्ष 2020 में हुई खुदाई में 8वीं से 5वीं ईस्वी के बीच का एक मंदिर, चार हज़ार वर्ष पुराने मिट्टी के बर्तन तथा दो हज़ार वर्ष पुरानी दीवार मिली थी। इसके अतिरिक्त एकमुखी शिवलिंग भी प्राप्त हुआ था, किंतु इसके काल का अभी तक निर्धारण नहीं हो सका है।
- यहाँ से प्राप्त अभिलेख का निर्माण ग्रामी (मुखिया) द्वारा किया गया, जिसमें यह उल्लिखित है कि यहाँ बल्यष्टि (शिवलिंग) की स्थापना कराई गई है।

बच्चा गोद लेने के लिये मैरिज सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा कि बच्चा गोद लेने के लिये विवाह प्रमाण-पत्र अनिवार्य शर्त नहीं है।

प्रमुख बिंदु

- न्यायालय ने यह टिप्पणी ट्रांसजेंडर रीना किन्नर और उनके पति द्वारा दायर की गई एक रिट पर सुनवाई करते हुए की, जिसमें बच्चे को गोद लेने की मांग की गई थी।
- हिंदू दत्तक और भरण-पोषण अधिनियम, 1956 के अनुसार, एकल माता-पिता भी एक बच्चे को गोद ले सकते हैं।

नोट :

- गौरतलब है कि मद्रास हाईकोर्ट ने वर्ष 2019 में एक निर्णय में कहा था कि हिंदू विवाह अधिनियम के तहत 'दुल्हन' शब्द के अंतर्गत ऐसे ट्रांसजेंडर और इंटरसेक्स व्यक्ति शामिल है, जो स्वयं की एक महिला के रूप में पहचान कराते हैं।
- ट्रांसजेंडर के कल्याण तथा उनके विरुद्ध होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के लिये संसद द्वारा वर्ष 2019 में ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 को पारित किया गया था। इसमें ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ होने वाले भेदभाव को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है, जिसमें निम्नलिखित के संबंध में सेवा प्रदान करने से इनकार करना या अनुचित व्यवहार करना शामिल हैं- (1) शिक्षा (2) रोज़गार (3) स्वास्थ्य सेवा (4) सार्वजनिक स्तर पर उपलब्ध उत्पादों, सुविधाओं और अवसरों तक पहुँच एवं उनका उपभोग (5) कहीं आने-जाने का अधिकार (6) किसी मकान में निवास करने, उसे किराये पर लेने और स्वामित्व हासिल करने का अधिकार (7) सार्वजनिक या निजी पद ग्रहण करने का अवसर।

लखनऊ में देश का पहला ग्रीन बूथ

चर्चा में क्यों ?

- 23 फरवरी, 2022 को संपन्न हुए उत्तर प्रदेश विधानसभा के चौथे चरण के मतदान में लखनऊ के एपी सेन पीजी कॉलेज में ग्रीन बूथ बनाया गया।

प्रमुख बिंदु

- लोगों को पर्यावरण के प्रति बेहतर संदेश देने के लिये इस ग्रीन बूथ को बनाया गया है।
- इस बूथ की विशेषता शून्य कार्बन उत्सर्जन थी। यहाँ पूरी व्यवस्था का संचालन वैकल्पिक ऊर्जा (सौर ऊर्जा) से किया गया।
- इस बूथ में मतदाताओं को लोकतंत्र के उत्सव की बेहतर अनुभूति के लिये सुंदर, हैंडमेड सजावट, जैसे- रंगोली तथा पानी के लिये मटकों की व्यवस्था की गई थी।
- गौरतलब है कि मतदान के प्रति जागरूकता के लिये पिंक बूथ तथा आदर्श बूथ का भी निर्माण किया जाता है।

चरकुला और कत्थक

चर्चा में क्यों ?

- 27 फरवरी, 2022 को मथुरा रोड स्थित पुराना किला, दिल्ली में आयोजित सांकृतिक संध्या में उत्तर प्रदेश से चरकुला एवं कत्थक की प्रस्तुतियाँ दी गई।

प्रमुख बिंदु

- सांस्कृतिक संध्या का उद्घाटन केंद्रीय विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने किया। यह आयोजन आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत विदेश मंत्रालय एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा किया गया।
- इसमें 25 राज्यों के 175 कलाकारों ने प्रस्तुतियाँ दीं जिसमें उत्तर प्रदेश का चरकुला और कत्थक शामिल हैं।
- चरकुला उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में किया जाने वाला नृत्य है। इस नृत्य में महिलाएँ अपने सिर पर बड़े बहु-स्तरीय वृत्ताकार लकड़ी के पिरामिडों को रखकर कृष्ण भक्ति गीतों पर नृत्य करती हैं।
- कथक भारत के शास्त्रीय नृत्यों में से एक है जो मुख्य रूप से उत्तर भारत में प्रदर्शित किया जाता है। कथक का नृत्य की एक विशिष्ट विधा के रूप में विकास पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के प्रसार के साथ हुआ।
- यह अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में प्रमुख कला के रूप में विकसित हुआ। इसके प्रमुख कलाकारों में बिरजू महाराज का नाम उल्लेखनीय है जिनकी अभी हाल ही में मृत्यु हो गई है।

नोट :